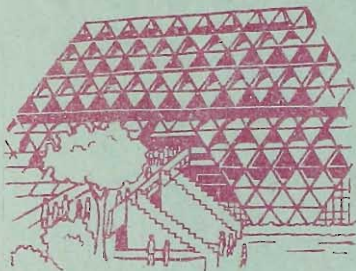


हवाई पत्र
Aerogramme

भारत-89, विश्व फिलैटेलि प्रदर्शनी-नई दिल्ली, 20-29 जनवरी 1989
INDIA-89, WORLD PHILATELIC EXHIBITION-NEW DELHI, 20-29 JANUARY 1989



हॉल ऑफ नेशन्स प्रगति मैदान-नई दिल्ली.
HALL OF NATIONS, PRAGATI MAIDAN-NEW DELHI

S. H. RAZA. ESQ.
101, RUE DE CHARONNE
2. CITE DU COUVENT
75011 PARIS
FRANCE.

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

भेजने वाले का नाम और पता:-
Sender's Name and Address:-

NEELIMA THAKUR,

BOMBAY, INDIA.

Pramat Radionics
M. G. Road Dombivli (west)

421202

INDIA.

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये
No Enclosures Allowed

माननीय श्री राजा, सादर नमस्कार.

पत्र काफी विषेय से लिख रही हूँ अतएव क्षमा प्रार्थी हूँ. आपसे मिलकर तो खुशी हुई थी किन्तु श्रीमती जैनिन से मिलकर खुशी द्विगुणित हो गयी. उनसे भी काफी बाने की, दिलचस्प व्यक्तित्व है उनका.

आपसे मन तो करता है ठेर सारी बाने करने का, सीखने का, किन्तु आपका समय इतना घनी है कि जो सौभाग्य से मिलता है उसमें ही संतोष करना पड़ता है.

क्या आपके आने के पूर्व ही आपके एपॉइंटमेंट्स तय हो जाते हैं? यदि ऐसा है तब तो आपका समय मिलना कठिन है अन्यथा आपको घर लाने की इच्छा है.

मुझे यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ कि आप भारतीय संस्कृति से इतना लगाव रखते हैं, वैसे भी आपमें भारतीयता छिपती नहीं है, किन्तु आश्चर्य हुआ कि आपने श्रीमती जैनिन को हिंदी से इतना अछूता कैसे रखा. एकदम विपरीत! हिंदी के संदर्भ में.

मैं लेखन में रुचि रखती हूँ और आपके विषय में लिखने की इच्छा है किन्तु आपसे मुलाकात ही इतनी संक्षिप्त होती है कि वह विषय ही निकल नहीं पाना और जो कुछ पूछना चाहती भी हूँ वह आपको मानने पाकर टर्जनिरेक में भूल जाती हूँ, देखिए न, पिछली बार आपको जन्मदिन के शुभकामनाएं देना तक भूल गयी.

गर्म आती है कि आप उम्र में पुर्जु होकर, इतने व्यस्त होकर भी मुझे लिखने का समय निकाल लेते हैं और मैं उनकी ही स्फूर्ति से जवाब नहीं दे पाती, किन्तु यहां की मशीनी जिंदगी में इन्सान मन की आवाज सुन ही नहीं पाना. मेरी दिनचर्या प्रायः ५ बजे से प्रारंभ होकर रात्रि की १० बजे खत्म होती है. जिसमें से ६.३० से ८ बजे रात्रि तक का समय सर्विस के लिए चक्कर में निकल जाना है, आने पर कुछ लिखने का उत्साह ही शेष नहीं रहता.

आपसे सीखूंगी अब काफी सारी अच्छी अच्छी बातें! आपकी अगली यात्रा में क्या श्रीमती जैनिन भी साथ होंगी? अगली बार मैं आपसे जरा इतमीनान से मिलना चाहती हूँ, उम्मीद है कि आप अपना वेशष्णमती समय देंगे.

आपका हिंदी कविता से गहरा अनुराग देखकर खुशी हुई साथ ही आश्चर्य भी! मुझे भी कविताओं में रुचि है किंतु जड़े मजबूत नहीं हैं।

श्रीमती जैनिन को हम सबकी ओर से नमस्कार. मैं १ महीने के लिए खैरागढ़ जा रही हूँ, आने पर आपके प्रेमपूरित पत्र की प्रतीक्षा रहेगी.

शेष शुभ - आपकी नीलिमा.